समयसार, ३२० गाथा, उसकी जयसेनाचार्य की टीका। पहला पैराग्राफ हो गया है, दूसरा पैराग्राफ। एकदम सूक्ष्म तत्त्व है। हमारे सेठ पूछते हैं कि सूक्ष्म क्यों कहते हो?

श्रोता : उसका स्पष्टीकरण.....

पूज्य गुरुदेवश्री : वह अतीन्द्रिय ज्ञान से पकड़ में आये ऐसी चीज़ है। सेठ? विषय क्या चीज़ है? सम्यग्दर्शन है, वह पर्याय-अवस्था है परन्तु उसका विषय-ध्येय... क्या चीज़ है? कैसी है? उस चीज़ की व्याख्या पहले संक्षिप्त कहेंगे, विशेष फिर कहेंगे।

पहला शब्द है **सर्वविशुद्ध...** कैसा है भगवान आत्मा अन्दर? एक समय की पर्यायरहित चीज़ है! शरीर तो नहीं, वाणी तो उसमें नहीं, पुण्य-पाप का विकल्प जो राग है, वह तो उसमें नहीं; परन्तु एक समय की पर्याय जो मोक्ष और मोक्ष के मार्ग की है, वह भी उसमें नहीं है। ऐसा सर्वविशुद्ध भगवान आत्मा!

पन्ने तो हैं न हाथ में? पन्ने हों तो ठीक पड़ेगा उसमें। है नेमिचन्दभाई? पन्ने में ध्यान रखना, हों! उन गहनों को घर में कैसे रखते हो? हीरे को डिब्बी में रखते हैं, वैसे ये पन्ने चूंथ जाये और मैले हो जायें, ऐसे नहीं रखना। यह तो हीरे जैसी चीज़ है। समझ में आया?

क्या कहते हैं? **सर्वविशुद्ध...** भगवान आत्मा एक सैकण्ड के असंख्यातवें भाग में एक समय में वस्तु सर्वविशुद्ध ध्रुव। सर्वविशुद्ध-एक बोल। **पारिणामिक....** सहज त्रिकाली भाव, **सर्वविशुद्ध पारिणामिक...** पारिणामिक अर्थात् सहज, किसी की अपेक्षा-पर्याय की नहीं, निमित्त की नहीं, निमित्त के अभाव की नहीं-ऐसा त्रिकाली परमपारिणामिक **परमभावग्राहक...** ऐसा जो परमभाव ध्रुव। समझ में आया? ऐसा परमभाव, त्रिकालीभाव, एक समय की पर्यायरहित भाव। परमभाव ग्राहक यह है अन्दर में ऐसा। है उसे बताते हैं, अन्दर में है ऐसा प्रत्येक में, उसे बताते हैं, उसकी दृष्टि करना पहले ऐसा कहते हैं। उसे ख्याल में लिये बिना दृष्टि कहाँ से करे? समझ में आया?

प्रथम में प्रथम सम्यग्दर्शन की प्राप्ति करने में उसका ध्येय क्या ? उसका विषय क्या ? यह बात चलती है। सूक्ष्म है। ऐसी बात जैनदर्शन के सिवाय अन्यत्र कहीं नहीं हो सकती।

श्रोता : दूसरे मोक्ष की बात तो करते हैं।

पूज्य गुरुदेवश्री : वे सब बात करें, कल्पना की डींग (गप्प) मारते हैं। समझ में आया ? उसे पता नहीं सत् का, वह माने कि यहाँ भी ठीक है, यहाँ भी ठीक है। ठीक है ही नहीं कहीं। सर्वज्ञ परमेश्वर वीतरागदेव ने एक सैकेण्ड के असंख्य भाग में तीन काल-तीन लोक देखा, उनके मुख से वाणी निकली, वह आगम और उन्होंने कहा वह पदार्थ है। नन्दकिशोरजी !

श्रोता : यह तो सम्प्रदाय की बात है।

पूज्य गुरुदेवश्री : सम्प्रदाय की नहीं, वस्तु की स्थिति ऐसी है। यह सम्प्रदाय की बात नहीं है। समझ में आया ? जैनदर्शन कोई सम्प्रदाय नहीं है। वस्तु का ऐसा स्वभाव है, उसे जैन कहते हैं। ऐसी जैन की जो अन्दर वीतरागस्वरूप चीज़ है ! सर्वविशुद्ध ! उसमें राग नहीं, मलिन पर्याय नहीं, एक समय की हीन अवस्था भी नहीं; पर्याय जो एक समय की है, वह भी नहीं। है न, **पर्याय है परन्तु त्रिकाली ध्रुव में पर्याय का अभाव है।** समझ में आया ?

सर्वविशुद्ध-पारिणामिक... पारिणामिक अर्थात् सहजभाव। जिसमें सहजरूप, त्रिकाली ध्रुव परमभाव-ऐसा जो **परमभाव,** ध्रुवभाव, ज्ञायकभाव, अविनाशीभाव, उसका **ग्राहक**-उसे जाननेवाला नय। नय अर्थात् ज्ञान का अंश। जो ऐसी परमभाव वस्तु को पकड़े-जाने, उसका नाम द्रव्यार्थिकनय कहने में आयेगा। देखो ! **परमभावग्राहक शुद्ध-उपादानभूत...** पहले उपादान आ गया, वह पर्याय का था। यह शुद्ध उपादान ध्रुव का है। शास्त्र तात्पर्य, दोपहर में आता है न। समझ में आया ?

ध्रुव... नित्यानन्द प्रभु जिसमें हलन-चलन / मोक्ष का मार्ग और मोक्ष की पर्याय भी जिसमें नहीं। आहा..हा.. ! समझ में आया ? ऐसा **शुद्ध-उपादानभूत...** ऐसा शब्द पड़ा है न ! उसमें शुद्ध उपादानरूप से, ऐसा था; '**भूत**' नहीं था। पहले पाँचवीं पंक्ति में... शुद्ध उपादानरूप से कर्ता नहीं-ऐसा था।

ऐसा वहाँ पर्याय थी; इधर 'शुद्ध-उपादानभूत' त्रिकाल (ध्येय की बात है)। समझ

में आया ? शान्ति से समझना अपूर्व चीज़ है। आचार्य ने यह टीका इतनी सूक्ष्मता से की है। अकेला अमृत बहाया है। समझ में आया ?

जिसे समझ में न हो तो उसे समझना तो पड़ेगा न पहले (कि) क्या चीज़ है ? और किस चीज़ की दृष्टि करने से सम्यग्दर्शन होता है। सम्यग्दर्शन तो धर्म की पहली सीढ़ी है, धर्म की दशा प्रगट हुए बिना उसे धर्म कहाँ से होगा ? समझ में आया ? ज्ञान और चारित्र तो बाद में, परन्तु सम्यग्दर्शन हो तो ज्ञान सच्चा होता है और ज्ञान सच्चा हो तो स्वरूप में स्थिरता हो तो चारित्र सच्चा होता है। प्रथम, दृष्टि का विषय क्या है, उसका तो पता नहीं, तो कहते हैं कि **परमभावग्राहक...** परमभाव त्रिकाल को जाननेवाला। ग्राहक अर्थात् ग्रहण करनेवाला, ऐसे त्रिकालभाव को ग्रहण करनेवाले, ऐसे नय का अंश-ज्ञान का वर्तमान अंश। आगे कहेंगे। **शुद्ध-उपादानभूत...** त्रिकाली ध्रुव ज्ञायक भगवान... चैतन्यबिम्ब, अनादि-अनन्त (अर्थात्) आदि-अन्तरहित—ऐसे शुद्ध उपादानभूत-उपादानस्वरूप ऐसा कहते हैं। इतने तो विशेषण दिये। आहा..हा..! समझ में आया ?

शुद्धद्रव्यार्थिकनय से... ऐसी जो चीज़, जो त्रिकाली ध्रुवस्वभाव, यह शुद्धद्रव्य। शुद्धद्रव्य अर्थात् त्रिकाली सामान्य स्वभाव, यह शुद्धद्रव्यार्थिक-शुद्धद्रव्य को अर्थिक-जिस ज्ञान का प्रयोजन शुद्ध द्रव्य को लक्ष्य में लेना है—ऐसे नय को शुद्धद्रव्यार्थिकनय कहते हैं। शुद्ध... द्रव्य, द्रव्य अर्थात् वस्तु, अर्थिक अर्थात् जिसका प्रयोजन - ऐसा नय। जिस ज्ञान के अंश का प्रयोजन त्रिकाली ध्रुव को लक्ष्य में लेना है—ऐसे नय को यहाँ शुद्धद्रव्यार्थिकनय कहते हैं। आहा..हा..!

संसार में-व्यापार में यह बात नहीं होती। होती है ? (तुम) दो भाईयों के बीच यह बात कभी की है ? सम्प्रदाय में जाये वहाँ भी नहीं मिलती, (वहाँ) दया पालो, भक्ति करो और यात्रा करो, पूजा करो और व्रत करो; स्थानकवासी हो तो दया पालो, मन्दिरवासी हो तो यात्रा-पूजा करो... मन्दिर-मन्दिर बनाओ। दिगम्बर हो तो ऐसा खाना और ऐसा न खाना-पीना, वह उसमें घुस गया। ऐ ई! पोपटभाई!

मुमुक्षु : ऐसा चलता है।

पूज्य गुरुदेवश्री : चलता है, तब तो यह बात चलती है। कहते हैं, ओहो..हो..!

अन्दर वस्तु जो भगवान आत्मा-ध्रुव है, उसमें यह शरीर तो नहीं, वाणी तो नहीं, कर्म तो नहीं, पुण्य-पाप के विकल्प / राग, वह तो नहीं परन्तु एक समय की पर्याय—जो प्रगट पर्याय / व्यक्त पर्याय जो वर्तमान अवस्था है, वह भी जिसमें नहीं। समझ में आया? गजब! भाई! कितनों ने ही तो ऐसा सुना नहीं होगा! कौन जाने क्या होगा यह?

सर्वविशुद्ध.... फिर से लेते हैं। ये भाई तो जानेवाले हैं। ठीक, अब अन्त में व्याख्यान में सुन तो जायें कि ऐसी चीज़ थोड़ी है वीतरागमार्ग में-वस्तुमार्ग में।

मुमुक्षु : प्रभु के मार्ग में है।

पूज्य गुरुदेवश्री : प्रभु! अकेला पवित्रता का पिण्ड, अकेला सिद्धस्वभाव का पुंज, अकेला नित्यानन्द-जिसमें नित्य आनन्द पड़ा है—ऐसी चीज़, वह सर्वविशुद्ध पारिणामिक अर्थात् त्रिकालभाव! पारिणामिक अर्थात् सहज परिणाम आत्मस्वरूप का लाभ। आत्मस्वरूप का लाभ अर्थात् वास्तविक आत्मस्वरूप तो ध्रुव (है) पारिणामिक की व्याख्या है, पंचास्तिकाय में है, भाई! '**आत्मस्वरूप लाभः पारिणामिकः**' (गाथा ५६) समझ में आया? पंचास्तिकाय में है।

मुमुक्षु : ५५-५६ में?

पूज्य गुरुदेवश्री : ५६ में है। खबर है न? ए... ५६ (गाथा) आयी। ५६ में है। **द्रव्य आत्मलाभहेतुकः परिणामः** संस्कृत है। यह अमृतचन्द्राचार्य ने कहा है। द्रव्य-आत्मलाभ; द्रव्य अर्थात् वस्तु; वस्तु अर्थात् पदार्थ और उसका आत्मलाभ - स्वरूप का लाभ, जिसको यहाँ पारिणामिकभाव कहते हैं। यह द्रव्य का आत्मलाभ-वस्तु का स्वरूप, उसका लाभ; लाभ अर्थात् उसकी अस्ति (अर्थात्) वस्तु का त्रिकाली स्वरूप, उसका लाभ अर्थात् मौजूदगी—ऐसा जो कारण, ऐसा परिणाम। समझ में आया?

यह तो अन्तिम की बात, सम्यग्दर्शन के विषय की (बात है)।

मुमुक्षु : मक्खन है।

पूज्य गुरुदेवश्री : मक्खन है। कभी सुना ही नहीं अन्दर में। कुछ भी सुनकर जिन्दगी व्यतीत कर दी।

मुमुक्षु : अब आप सुनाईये।

पूज्य गुरुदेवश्री : द्रव्य-आत्मलाभहेतुकः, देखो! संस्कृत में है। (नीचे फुटनोट में अर्थ दिया है।) परिणाम से युक्त जो पारिणामिक कैसा है? कि आत्मलाभ, आत्मलाभ अर्थात् स्वरूप का लाभ। स्वरूप का लाभ का अर्थ यहाँ पर्याय नहीं। स्वरूप की मौजूदगी। देखो! आत्मलाभ का अर्थ कोष्ठक में किया है-मौजूदगी।

भगवान आत्मा नित्यानन्द एक समय की वर्तमान प्रगट अवस्था के अतिरिक्त... समझ में आया? आत्मलाभ-आत्मा की अस्ति। देखो! पर्याय की अस्ति नहीं कहा, आत्मा की अस्ति यहाँ कहा। आहा..हा..! पुण्य-पाप का राग-विकार तो एक ओर रह गया परन्तु एक समय की पर्याय, वह द्रव्य-आत्मलाभ नहीं। भगवान ध्रुव नित्यानन्द प्रभु आदि-अन्तरहित सत्स्वरूप—ऐसे आत्मा का लाभ। स्वरूप प्राप्ति। नीचे हमारे पण्डितजी ने अर्थ किया है कि आत्मलाभ=स्वरूप प्राप्ति - स्वरूप को धारण कर रखना, अपने को धारण कर रखना, अस्तित्व। द्रव्य अपने को धारण कर रखता है अर्थात् अपनी अस्ति रहे, उसे पारिणामिक कहने में आता है। समझ में आया? उसे ही यहाँ पारिणामिक कहा है। पारिणामिक=वस्तु का अस्तित्वरूप भाव, त्रिकाल सत्रूप भाव, त्रिकाल नित्यरूप भाव, उसे यहाँ पारिणामिक आत्मस्वरूप अस्तित्व कहने में आता है। जिसमें एक समय की पर्याय भी नहीं आती। नन्दकिशोरजी! ऐसा **परमभावग्राहक...** ऐसा त्रिकाली भाव, स्वरूप की अस्तित्वरूप ध्रुवभाव, उसे ग्रहण करनेवाला नय, जो कि **शुद्ध-उपादानभूत...** त्रिकाल है। शुद्ध उपादान अन्दर आदरणीय चीज़ हो तो शुद्ध-उपादान। ग्रहण करनेयोग्य चीज़ हो तो वह चीज़ है। सम्यग्दृष्टि को (ज्ञानी को) धर्मी को वह शुद्ध उपादान चीज़ ग्रहण करनेयोग्य है, वह चीज़ है। त्रिकाली ध्रुव आश्रय करनेयोग्य है। समझ में आया?

ऐसा **शुद्ध-उपादानभूत...** अभेद कर दिया। शुद्ध-उपादानभूत, स्वरूप। एक समय की पर्याय चलती है, भले धर्म की पर्याय प्रगट हुई हो तो भी उस पर्याय से रहित, पर्याय से / अवस्था से रहित **शुद्ध-उपादानभूत...** त्रिकाल चीज़ **शुद्धद्रव्यार्थिकनय...** शुद्ध द्रव्य को जाननेवाला ऐसा नय। उस नय से **जीव...** भगवान आत्मा **कर्तृत्व-भोक्तृत्व से...** रहित है। आहा...हा...! समझ में आया? जैनदर्शन सूक्ष्म है। यह जैनदर्शन! वस्तु जो त्रिकाली ध्रुव ज्ञायकभाव है; वह भाव, राग का भी कर्ता नहीं, राग का भोक्ता नहीं, बन्धपरिणाम का कर्ता नहीं, बन्ध के कारणरूप परिणाम का कर्ता नहीं; मोक्ष की पर्याय का

कर्ता नहीं, मोक्ष के मार्ग की पर्याय का कर्ता-भोक्ता नहीं। अरे! गजब बात है! नन्दकिशोरजी! कभी आया नहीं कि पुरुषार्थ क्या है? भगवान! तेरे घर में चीज़ ऐसी है।

मुमुक्षु : सबकी ऐसी है या..... ?

पूज्य गुरुदेवश्री : सबकी-सब आत्मा में ऐसा है। सत्... सत्, अविनाशी नित्यानन्द नाथ! ऐसा जीव, वह जीव, हों! ध्रुव, वह जीव।

मुमुक्षु : वनस्पति का जीव भी ऐसा होगा।

पूज्य गुरुदेवश्री : वे सब-वनस्पति, निगोद सब भगवान परमात्मास्वरूप अन्दर है। समझ में आया?

यहाँ तो जिसे दृष्टि करनी है, उससे कहते हैं कि ध्येय करनेयोग्य यह चीज़ है; इसके अतिरिक्त राग का ध्येय, निमित्त का ध्येय और एक समय की पर्याय का ध्येय / लक्ष्य में लेने से धर्म नहीं होता, सम्यग्दर्शन प्राप्त नहीं होता। आहा...हा...! समझ में आया? भाषा सादी है, ऐसी कोई बहुत गूढ़ नहीं है, भाव भले गूढ़ हो। समझ में आया? परन्तु किसी दिन सुना नहीं, समझे नहीं, धर्म के नाम पर ओघे-ओघे (भेड़चाल) चलता है, ऐसा नहीं चलता। मार्ग क्या चीज़ है? किस चीज़ को दृष्टि में लेना और उसका आश्रय करने से धर्म होगा-सम्यग्दर्शन (होगा); इसके अतिरिक्त धर्म होगा नहीं। सम्यग्दर्शन के बिना कोई भी क्रिया व्रत, नियम आदि करे, वे सब बिना एक के शून्य हैं। समझ में आया? श्यामदासजी! बराबर ठीक है। इस गाथा में आ गया। कहाँ गये प्रकाशदासजी! है या नहीं?

पन्ना है या नहीं पन्ना? तुम्हारे पास नहीं, मिला नहीं? पन्ना दो, देखो! पन्ना रखना चाहिए न तुम्हें? यहाँ तो थाली तो दे पहले, फिर थाली में भोजन परोसे न? नीचे थोड़े ही परोसना है? समझ में आया? देखो, उसमें क्या लिखा है? रखना चाहिए न?

ऐसा जीव, कैसा जीव? कि जो सर्वविशुद्ध त्रिकाल पारिणामिक सहज आत्मस्वरूप की अस्तित्वरूप भाव। ओहो..हो..! एक समय की पर्याय, वह आत्मस्वरूप का अस्तित्व नहीं। एक समय की पर्याय में जो रमता है-लक्ष्य करता है, वह पर्यायदृष्टि-मिथ्यादृष्टि है। समझ में आया? आहा..हा..! उसकी पर्यायबुद्धि है।

यहाँ तो कहते हैं कि त्रिकाली भगवान, ऐसा जो जीव, ऊपर कहा ऐसा विशेषणवाला (जीव), वह **कर्तृत्व-भोक्तृत्व से...** कर्ता-भोक्ता से। पर का कर्ता-भोक्ता नहीं, रागादि

का कर्ता-भोक्ता नहीं; इस बन्ध-मोक्ष के कारण का कर्ता-भोक्ता नहीं, उससे शून्य है। कर्ता-भोक्ता के (परिणाम से) शून्य और बन्ध-मोक्ष के कारण से शून्य - ऐसा यहाँ कहा है।

मुमुक्षु : अशुद्धता और शुद्धता दोनों से ?

पूज्य गुरुदेवश्री : हाँ, दोनों से। समझ में आया ?

भगवान आत्मा नित्यानन्द प्रभु ध्रुव सच्चिदानन्दस्वरूप वह चीज़, राग का कर्ता नहीं, व्यवहार, दया, दान का कर्ता नहीं और दया, दान का भोक्ता भी ध्रुव चीज़ नहीं। समझ में आया ? इसके अतिरिक्त बन्ध-मोक्ष के कारण-बन्ध का कारण जो मिथ्यात्व, अव्रतादि परिणाम से भी वह ध्रुव चीज़ रहित है। समझ में आया ?

बन्ध-मोक्ष के कारण... पहले इसकी व्याख्या होती है। मिथ्यात्वादि जो परिणाम, बन्ध का कारण है, वह बन्ध का कारण परिणाम जो है, उससे शून्य आत्मा है। ध्रुव भगवान में वह परिणाम है ही नहीं। समझ में आया ? आहा..हा..! मोक्ष का कारण-अरे! सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र का जो परिणाम-सच्चा मोक्षमार्ग, ऐसा परिणाम... मोक्षमार्ग भी परिणाम है, पर्याय है, एक समय की अवस्था है, तो मोक्ष के मार्गरूपी परिणाम निश्चय, सच्चा सम्यग्दर्शन, सच्चा सम्यग्ज्ञान, (सच्चा) सम्यक्चारित्ररूप वर्तमान परिणाम / पर्याय, उससे ध्रुव रहित है। समझ में आया ? शोभालालजी!

यह पुस्तक / पन्ने रखे हैं तुम्हारे, (हिन्दी भाषी) भाई आवें, पढ़े तो पता पड़े कि जैनदर्शन में क्या है ? कैसी चीज़ है ? यह सब लॉजिक से युक्ति से सिद्ध करते हैं परन्तु अनादि काल से दरकार नहीं है।

मुमुक्षु : पुस्तक तो है उसके पास।

पूज्य गुरुदेवश्री : खोलने की दरकार कहाँ की है, सुननेवाले ने! कहो, समझ में आया ?

आहा..हा..! भगवान आत्मा नित्यानन्द शुद्ध द्रव्यार्थिकनय का (विषय) परमभाव-स्वभावभाव ऐसी चीज़, वह कर्ता से रहित और भोक्ता से रहित है। किसका ? यह बन्ध का कारणरूप परिणाम, उसका कर्ता नहीं; मोक्ष का कारणरूप परिणाम, उसका भी कर्ता नहीं। परन्तु वह बन्ध-मोक्ष के कारणरूप परिणाम से भी शून्य है। समझ में आया ?

और बन्ध तथा मोक्ष के परिणाम से शून्य। यह पहले बन्ध-मोक्ष का कारण कहा था। समझ में आया?

भगवान आत्मा जो ध्रुवचीज़ है, जिसमें दृष्टि देने से, दृष्टि की थाप देने से सम्यग्दर्शन होता है—ऐसी जो चीज़ है; वह चीज़ कर्ता और भोक्ता से रहित है। पर्याय का कर्ता-भोक्ता भी द्रव्य नहीं है। आहा..हा..! समझ में आया?

मुमुक्षु : कर्ता-भोक्ता द्रव्य किस प्रकार होगा?

पूज्य गुरुदेवश्री : आहा..हा..! अपनी निर्मल पर्याय-मोक्ष के मार्ग की आनन्द की पर्याय का भी वह द्रव्य ध्रुव कर्ता नहीं और उसका वह भोक्ता भी नहीं। समझ में आया? है या नहीं सामने पन्ने दिये हैं, पन्द्रह सौ छपाये हैं रामजीभाई ने।

मुमुक्षु : वजुभाई ने।

पूज्य गुरुदेवश्री : यह तो रामजीभाई ने कहा था तब न! कहो, समझ में आया? आहाहा!

मुमुक्षु : कारणपरमात्मा...

पूज्य गुरुदेवश्री : कारणपरमात्मा... परन्तु यहाँ वह कारण-फारण नहीं लेना है। कार्य का कारण—ऐसा यहाँ नहीं लेना है। समझ में आया? वह तो नियमसार में पर्याय का -मोक्षमार्ग का कथन है न, वहाँ कारण और कार्य की बात है। यहाँ कार्य का कारण ध्रुव-ऐसा भी यहाँ नहीं लेना है। समझ में आया? ऐ ई!

मुमुक्षु : वह प्रकरण दूसरा है?

पूज्य गुरुदेवश्री : (यह) प्रकरण दूसरा है। मोक्षमार्ग में पर्याय का कथन है। कारण-मोक्षमार्ग ही पर्याय है। समझ में आया? वहाँ से तो उठाया है तीसरी गाथा में **णियमेण य जं कज्ज** - निश्चय से करनेयोग्य है परन्तु वह तो पर्याय की बात है। द्रव्य तो निश्चय की पर्याय का कर्ता ही नहीं। अरे! कौन सी अपेक्षा से बात चलती है। समझना तो चाहिए न? वहाँ (नियमसार में) ऐसा ही लिया पहले से तीसरी गाथा में—**नियमेन च निश्चयेन यत्कार्यं** - निश्चय से करनेयोग्य हो तो मोक्ष का मार्ग करनेयोग्य है। सम्यग्दर्शन-

ज्ञान-चारित्र। परन्तु वह करनेयोग्य—पर्याय करनेयोग्य है। द्रव्य तो मोक्षमार्ग की पर्याय का करनेवाला ही नहीं। आहा..हा..!

मुमुक्षु : ऐसा है तो जगह-जगह कुछ लिखाते हैं तो हम भूल जाते हैं।

पूज्य गुरुदेवश्री : भूल जाते हो? ठीक कहते हो! खाता-बही में खतौनी करते हो या नहीं जगह-जगह, भिन्न-भिन्न लिखा हो तो? कि अमुक के नाम में इक्यावन रुपये, अमुक के हजार रुपये, तो जब-जब खाते में खताना हो तो खताते हो या नहीं, भिन्न-भिन्न लिखा है तो (भिन्न-भिन्न) खाते में खतौनी करते हो।

मुमुक्षु : वहाँ तो नहीं भूलते।

पूज्य गुरुदेवश्री : वहाँ तो नहीं भूलते।

मुमुक्षु : वहाँ तो नुकसान है।

पूज्य गुरुदेवश्री : यहाँ भी नुकसान-बड़ा नुकसान है। वहाँ तो नुकसान है ही नहीं। आहा..हा..! समझ में आया? पर्याय को द्रव्य में खताना, द्रव्य को पर्याय में खताना, यह खतौनी में बड़ा अन्तर है। यह तो वीतराग सर्वज्ञ परमात्मा त्रिलोकनाथ वीतरागदेव ने जाना, उनकी वाणी में वस्तुस्वरूप ऐसा आया और ऐसा है, उसका निरूपण होता है।

वस्तु है तो वस्तु ध्रुव है और एक समय की कार्यरूपी पर्याय है परन्तु उस कार्य का कारण ध्रुव—ऐसा यहाँ नहीं है। आहा..हा..! समझ में आया? धीरे-धीरे समझना, यह तो अमृत का झरना है, लो! झरना है, जयकुमार भी कहते हैं। भगवान! बात तो ऐसी है, कोई अलौकिक बात है। आहा..हा..!

'जीव' कैसा जीव? कि ऊपर कहा वैसा (सर्वविशुद्ध-पारिणामिक-परमभावग्राहक शुद्ध-उपादानभूत) शुद्धद्रव्यार्थिकनय से ध्रुव त्रिकाली चैतन्य भगवान अपना निजस्वरूप। निजस्वरूप कायम रहनेवाली चीज़ सत् है तो आदि-अन्त के भावरहित चीज़, वह (जीव) कर्तृत्व-भोक्तृत्व से (शून्य है)। वह अपनी पर्याय का कर्ता और भोक्ता से वह ध्रुव द्रव्य तो रहित है। समझ में आया? बाद में विशेष आयेगा, हों! बहुत स्पष्टीकरण आयेगा। यह तो (३२०) गाथा है न बड़ी। आहा..हा..! जैनधर्म किसे कहते हैं, उसकी तो खबर नहीं। जैनधर्म की पर्याय-धर्म तो पर्याय है। यहाँ तो कहते हैं कि धर्म वीतरागी

पर्याय है, द्रव्य तो उसका भी कर्ता ही नहीं-भोक्ता ही नहीं। आहा..हा..! समझ में आया?

ध्रुव चिदानन्द प्रभु नित्यानन्द निर्विकल्प निष्क्रिय अभेद—ऐसा जो ध्रुवस्वभाव, ऐसा जो जीव, वह जीव... वह जीव। वह जीव, अपनी पर्याय में राग और निर्मल पर्याय दोनों का कर्ता नहीं और दोनों का वह भोक्ता ही नहीं। समझ में आया?

बन्ध-मोक्ष के कारण से शून्य है। भगवान आत्मा नित्यानन्द प्रभु, ध्रुव सत् (है), वह तो बन्ध के कारण-मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद, कषाय, योग इन परिणाम से भी ध्रुव तो शून्य है। ये परिणाम ध्रुव में है नहीं; और मोक्ष का मार्ग;... मोक्ष का कारण है न? क्षायिक समकित क्षायिक चारित्र - सम्यग्दर्शन-ज्ञान, केवलज्ञान। यहाँ तो कारण है। मोक्ष का कारण सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र वीतरागी पर्याय / अवस्था / हालत है। उस कारण से ध्रुव शून्य है; वह परिणाम ध्रुव में है नहीं। आहा..हा..! समझ में आया?

बन्ध-मोक्ष के कारण और परिणाम... यह क्या लिया फिर? बन्ध-मोक्ष का परिणाम ऐसा। वह कारण था-बन्ध-मोक्ष का कारण और इस बन्ध-मोक्षरूपी स्वतः परिणाम। केवलज्ञान का परिणाम-सिद्ध की पर्यायरूपी परिणाम और बन्ध का परिणाम - वर्तमान मिथ्यात्व आदि, इस परिणाम से ध्रुव शून्य है। आहा..हा..! समझ में आया? यह सिद्ध की पर्याय—अनन्त केवलज्ञान, अनन्त केवलदर्शन, अनन्त वीर्य, अनन्त आनन्द —ऐसी जो मोक्ष की पर्याय है, उससे ध्रुव शून्य है। ध्रुव में मोक्ष की पर्याय नहीं है। आहा..हा..! समझ में आया?

गजब बात, भाई! बन्ध-मोक्ष के कारण और बन्ध-मोक्षरूपी परिणाम, दोनों लेना। बन्ध-मोक्ष के कारण से भी आत्मा-ध्रुव शून्य है और बन्ध-मोक्ष के परिणाम से भी वस्तु (ध्रुवद्रव्य) शून्य है, उसका नाम यहाँ भगवान ध्रुव चीज़ जीव कहने में आता है। उस पर दृष्टि देने से सम्यग्दर्शन होता है। आहा..हा..! समझ में आया? समझ में आये ऐसी चीज़ है, हों! ऐसी कोई भाषा ऐसी नहीं है। भले कठिन पड़े अन्दर गोठवामामा परन्तु मार्ग तो यह है। ऐसी चीज़ है—ऐसा ख्याल तो आये न इसे अन्दर?

अन्दर चिदबिम्ब पड़ा है, वस्तु सत् है, वस्तु का स्वरूप ध्रुव—वह जीव, अपनी जो पर्याय कहने में आती है, उसका भी कर्ता-भोक्ता नहीं और वह बन्ध-मोक्ष के

कारणरूप जो परिणाम हैं, उससे वह ध्रुव शून्य है और बन्ध तथा मोक्ष का सीधा परिणाम पूरा बन्ध का परिणाम, मोक्ष का (परिणाम जो है), उस परिणाम से ध्रुव शून्य है। चिमनभाई! ऐसा (कभी सुना था?)

मुमुक्षु : बन्ध-मोक्ष के कारण और परिणाम तो है न?

पूज्य गुरुदेवश्री : कहा न! बन्ध-मोक्ष के परिणाम हैं परन्तु बन्ध-मोक्ष के कारणरूप परिणाम और बन्ध-मोक्ष के स्वयं के परिणाम ऐसा। समझ में आया? बन्ध-मोक्ष के कारणरूप परिणाम और बन्ध-मोक्षरूप परिणाम। समझे नहीं? जो बन्ध है, उसका कारण मिथ्यात्वादि वह परिणाम; उस परिणाम से शून्य, और मोक्ष के कारण मोक्ष का मार्गरूप परिणाम सम्यग्दर्शन-ज्ञान, उस परिणाम से ध्रुव शून्य और बन्ध परिणाम-सीधे बन्ध परिणाम—वर्तमान, कारण-बन्ध का कारण नहीं, बन्ध का परिणाम और मोक्ष का परिणाम, मोक्ष का (सीधा) परिणाम, उससे भी (ध्रुव) शून्य है। पण्डितजी! है? ऐसी चीज़ है या नहीं? पूरा पड़ गये हैं न? पहले घर में?

मुमुक्षु : पढ़ा था परन्तु ऐसा नहीं पढ़ा था।

पूज्य गुरुदेवश्री : ये पण्डितजी हैं, दोनों और यह वकील है। समझ में आया?

मुमुक्षु : इन्होंने समाज के काम किये हैं।

पूज्य गुरुदेवश्री : धूल भी नहीं करते हैं समाज का काम। कौन करता है? यहाँ तो कहते हैं द्रव्य अपनी पर्याय को नहीं करता तो समाज का (काम) कहाँ से करे? आहा..हा..! वीतराग सर्वज्ञ परमेश्वर का मार्ग। आत्मा, हों! आत्मा का वीतराग अर्थात् तू। तेरा परमेश्वर वीतरागस्वरूप से भरा पड़ा है—ऐसी ध्रुव चीज़ अपनी पर्याय को करे और भोगे नहीं तो पर को-समाज को कौन करे? अभिमान करके मिथ्यात्वभाव को करे! तो भी उस मिथ्यात्वभाव से ध्रुव तो शून्य है। समझ में आया? आहा..हा..!

बन्ध-मोक्ष के कारणरूप परिणाम, बन्ध-मोक्ष के कारणरूप परिणाम ऐसा लेना। उसके कारणरूप और बन्ध-मोक्षरूपी परिणाम, उससे ध्रुव शून्य है। ऐसा ध्रुव उनसे खाली है, अपने आनन्दादि गुणों से भरपूर है, परन्तु ऐसी पर्याय से शून्य है। आहा..हा..! गजब बात है।

मुमुक्षु : निर्मलपर्याय से भी शून्य?

पूज्य गुरुदेवश्री : निर्मलपर्याय से भी वह (ध्रुव) शून्य है। कहा न! मोक्ष का कारण और मोक्ष की पर्याय-सिद्ध की पर्याय से भी ध्रुव शून्य है। पर्याय है न! पर्याय तो एक समय की अवस्था है, (उससे शून्य है)। ध्रुव चीज़ है। त्रिकाली ध्रुव, जो केवलज्ञान की और सिद्ध की पर्याय से खाली है, सिद्ध की पर्याय उसमें है नहीं। **पर्याय, पर्याय में है; ध्रुव में है नहीं।** गजब बात, भाई! ऐ ई! पंकज आता है न ख्याल? ठीक। यह तो अमृत बहाते हैं अमृत! समझ में आया?

ओहो..! दो लाईन में कितना भर दिया है! आगे विशेष आयेगा, हों! स्पष्ट करेंगे। यह तो ऐसी बात कहने में आ गयी है - ऐसा यहाँ कहा है। सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार शुरु किया है, उसमें ऐसी बात कहने में आ गयी है।

ऐसा समुदायपातनिका में कहा गया था। देखो! पहले संस्कृत टीका में यह गाथा पहले आ गयी है, उसमें यह कहने में आ गया है। समझ में आया? अभी तो यहाँ बाहर की सिरपच्ची, दया, दान और व्रत करो तो इसे धर्म होगा.. धूल में भी नहीं होगा। अब सुन न!

मुमुक्षु : पंचम काल में होता होगा?

पूज्य गुरुदेवश्री : पंचम काल में (भी नहीं होता।) सुखड़ी (एक गुजराती मिठाई) है वह पंचम काल में पेशाब की होती होगी? आटा, शक्कर और घी इन तीनों की सुखड़ी होती है। पंचम काल में इन तीनों की जगह पानी के बदले पेशाब और शक्कर के बदले कीचड़, उसकी सुखड़ी बनती है। ऐ सेठ!

मुमुक्षु : महाराज! आप बारबार व्यवहार के (निषेध की) बात करते हो तो कोई नदी में डूबता हो तो डूबने दें?

पूज्य गुरुदेवश्री : परन्तु कौन डूबने दे, और करे कौन? वह तो ऐसी देह की क्रिया होनेवाली हो तो हुए बिना नहीं रहती, विकल्प आवे तो करता है परन्तु विकल्प आया तो देह की क्रिया हुई-ऐसा नहीं है और देह की क्रिया हुई तो वह बच गया ऐसा भी नहीं है।

मुमुक्षु : बचाने का भाव आया, वह धर्म तो हुआ?

पूज्य गुरुदेवश्री : उसमें धर्म तो कहाँ है? पुण्य-राग है और राग अपने को हितकर (है-ऐसा) मानता है, वह तो मिथ्यात्व का पोषक है। अजर प्याला है भाई! वीतराग का मार्ग है बापू! आहा..हा..!

मुमुक्षु : मार्ग को तो आप पर्याय कराते हो और पर्याय तो द्रव्य में है नहीं।

पूज्य गुरुदेवश्री : मार्ग पर्याय है, कर्तृत्व पर्याय में है; द्रव्य में कर्तृत्व कैसा? आहा..हा..! समझ में आया? कर्तव्य-फर्तव्य जो कहना, वह तो पर्याय में है। ऐसी पर्याय से तो भगवान कृतकृत्य ही है। उसका कर्तव्य कोई है ही नहीं। आहा..हा..! ऐ ई नन्दकिशोरजी! है या नहीं इसमें? (शास्त्र) पन्ना है, उस शब्द का तो अर्थ होता है। ज्ञान तो करना पड़ेगा न? अभी तक सुना था कुछ और यह बात है दूसरी। आहा..हा..!

मुमुक्षु : दिगम्बर की वाणी में दिगम्बर होने की ही बात है।

पूज्य गुरुदेवश्री : दिगम्बर की वाणी में दिगम्बर होना। **दिगम्बर अर्थात् रागरहित, पर्यायरहित की दृष्टि करना, वह दिगम्बर है।**

मुमुक्षु : सबका अर्थ बदल दिया।

पूज्य गुरुदेवश्री : सबका अर्थ बदल दिया, यह हमारे सेठ कहते हैं। समझ में आया? जैसा था, वैसा अर्थ है। आहा..हा..! समझ में आया?

यहाँ तो कहते हैं कि जहाँ दृष्टि डालना है, वह कर्तव्य पर्याय में है। मोक्षमार्ग की पर्याय कर्तव्य है परन्तु वह तो पर्याय का कर्तव्य है। ध्रुव में कर्तव्य है ही नहीं।

मुमुक्षु : कब?

पूज्य गुरुदेवश्री : त्रिकाल। यह बात तो कहते हैं, परिणाम से शून्य है, तो उसका अर्थ क्या है? समझ में आया? परिणाम-मोक्ष का परिणाम जो निश्चय सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र है, वे परिणाम हैं, वह परिणाम कर्तव्य है तो वह कर्तव्य तो द्रव्य में है ही नहीं; परिणाम में कर्तव्य हो तो हो... आहा..हा..! शोभालालजी! कभी सुना ही नहीं होगा वहाँ बीड़ी में कहाँ यह? था ही नहीं यह। वापस वहाँ सेठ ऐसा कहता है न! वहाँ तो था ही नहीं न।

आहा..हा..! मार्ग तो ऐसा है। लोगों को ख्याल नहीं है। पर्याय पर इतना जोर-राग पर जोर देता है। अरे! भगवान! पर्याय और राग तो तुझमें है ही नहीं। सुन तो सही! कितना जोर तुझे देना है? पर्याय पर जोर देगा तो मूढ़-मिथ्यादृष्टि होगा। समझ में आया? लालचन्दजी!

अजर प्याला पियो मतवाला चिन्ही अध्यात्मवासा;
आनन्दघन चेतन व्है खेले, देखे लोक तमाशा॥

आहा...हा...! भगवान तो आनन्दकन्द है, वह जगत् का साक्षी भी नहीं, भाई!

मुमुक्षु : साक्षी तो पर्याय में होता है न?

पूज्य गुरुदेवश्री : साक्षी तो पर्याय है। समझ में आया? ऐसी तो साक्षी की पर्याय तो जिसमें अनन्त पड़ी है, उसमें साक्षी कहाँ लेना है... समझ में आया? यह प्रीतिभोज की गाथा है। विवाह होने के बाद करते हैं न अन्तिम जीमण। हमारे यहाँ काठियावाड़ में करते हैं।

मुमुक्षु : अब पार्टी होने का रिवाज हो गया!

पूज्य गुरुदेवश्री : पार्टी हो गयी तो वह लो। हमारे पहले विवाह होता था न तो विवाह में-शादी में पहले सात टाइम जीमाते थे, सात टंक (टाइम) समझे? तीन दिन और एक आधा दिन।

मुमुक्षु : हमारे यहाँ भी पाँच-पाँच दिन होता था।

पूज्य गुरुदेवश्री : यहाँ भी पहले ऐसा होता था।

मुमुक्षु : ब्राह्मणों में तो महीनों....

पूज्य गुरुदेवश्री : ब्राह्मणों में तो एक महीने-महीने। हमारे गाँव में एक श्रीमाली ब्राह्मण है, बारात को एक महीने रखे। फिर अन्तिम दिन जीमन करे (प्रीतिभोज), इसलिए अच्छे में अच्छा और ऊँचे में ऊँचा जीमन करे। इसी प्रकार यह अच्छे में अच्छा और ऊँचे में ऊँचा जीमन है। आहा...हा...! समझ में आया?

मुमुक्षु : यहाँ किसकी शादी हो रही है?

पूज्य गुरुदेवश्री : शादी, आत्मा की... पुरुभाई! आहा...हा...!

यहाँ तो कहते हैं कि भगवान आत्मा-ध्रुव शादी के परिणाम से भी शून्य है और शादी का क्या; मोक्ष के मार्ग के परिणाम से भी ध्रुव शून्य है। वह तो क्या, सिद्धपद की पर्याय से ध्रुव शून्य है। आहा...हा...! जो शुद्धता की पर्याय है, उससे भी ध्रुव शून्य है। शुद्ध नहीं परन्तु (ध्रुव) शून्य है क्योंकि केवलज्ञान आदि तो क्षायिक पर्याय है, वह क्षायिकभाव

है। यह आयेगा, क्षायिकभाव है; तो क्षायिकभाव तो पर्याय है; पर्याय, ध्रुव में नहीं है। परमपारिणामिकभाव तो त्रिकाली ध्रुव है, उसमें पर्याय-फर्याय कैसी? समझ में आया?

'बन्ध-मोक्ष के कारण और कर्तृत्व-भोक्तृत्व से और परिणाम से शून्य' - **ऐसा समुदायपातनिका में कहा गया था।** -कथन में पहले यह कहना था-ऐसा आ गया था। **पश्चात् चार गाथाओं द्वारा जीव का अकर्तृत्वगुण के व्याख्यान की मुख्यता से सामान्य विवरण किया गया।** पहले यह आ गया है। अब विशेष बाद में कहेंगे। जो भाव खास कहना है वह। **चार गाथाओं द्वारा...** जीव अकर्तृत्व है-जीव में पर का-पर्याय का कर्तृत्व है ही नहीं। **अकर्तृत्वगुण के व्याख्यान की मुख्यता से...** मुख्यता से सामान्य कथन किया गया। **विवरण किया गया।** विवरण कहो या कथन कहो। **तत्पश्चात् चार गाथाओं द्वारा 'शुद्ध को भी जो प्रकृति के साथ बन्ध होता है, वह अज्ञान का माहात्म्य है' - ऐसा अज्ञान का सामर्थ्य कहनेरूप विशेष विवरण किया गया।**

क्या कहते हैं, देखो! अरे! ऐसा भगवान शुद्ध ध्रुव प्रभु, जिसमें पर्याय भी नहीं, तो विकार कहाँ से आया? ऐसी चीज़ में यह बन्ध जो अज्ञान का प्रगट होता है और कर्म का बन्ध होता है, वह तो अज्ञान का माहात्म्य है। स्वरूप का भान नहीं, इस अज्ञान के कारण से बन्ध होता है। समझ में आया?

मुमुक्षु : अज्ञान का माहात्म्य?

पूज्य गुरुदेवश्री : अज्ञान का माहात्म्य है न! अज्ञान का माहात्म्य है या नहीं इतना? आहा! वस्तु का माहात्म्य छोड़कर, अज्ञान का माहात्म्य! यह क्या हुआ! चिदानन्द भगवान... कितने ही कहते हैं न कि आत्मा शुद्ध है न! पवित्र है न! उसमें यह अज्ञान कहाँ से आया? ऐसा कितने ही कहते हैं। (उसका उत्तर) यह पर्याय में उत्पन्न किया तो आया। समझ में आया?

चिदानन्द भगवान, नित्यानन्द का नाथ (है); उस पर दृष्टि न करके एक समय के राग और पर्याय पर दृष्टि करके अज्ञान उत्पन्न हुआ। अज्ञान के कारण, ऐसा ध्रुवस्वरूप होने पर भी, बन्ध होता है। समझ में आया? ऐसा अज्ञान का सामर्थ्य कहा है। देखो! अज्ञान का सामर्थ्य कहा है। भ्रम का सामर्थ्य। आहा...हा...!

मुमुक्षु : पर्याय एक और उसका सामर्थ्य कैसा ?

पूज्य गुरुदेवश्री : है न ! आहा...हा... ! महाप्रभु ! त्रिकाल आनन्द का नाथ का आश्रय नहीं किया और एक समय की पर्याय-राग का आश्रय किया, अज्ञान हुआ। इस बन्ध के कारण में तो.। अज्ञान का सामर्थ्य है, समझ में आया ?

मुमुक्षु : धर्म का सामर्थ्य है न बन्ध में ?

पूज्य गुरुदेवश्री : बन्ध में धर्म का सामर्थ्य कहाँ से आया ? समझ में आया ? ऐ ई ! इस राग से धर्म होता है—ऐसा कहते हैं या नहीं ? व्यवहाररत्नत्रय से निश्चयरत्नत्रय होता है (ऐसा कहते हैं न) ! धूल में भी होता नहीं। सुन तो सही ! जितना व्यवहार साधन-फाधन कहा है, वह निश्चय से साधन नहीं परन्तु बाधक है। कहो, समझ में आया ? मोक्षमार्गप्रकाशक में स्पष्ट किया है। साधक कहा वही बाधक है। समझ में आया ?

अलौकिक चीज़ ! पर्याय जो अन्दर में वर्तमान में वर्तती है, उस पर्याय से भी वह वस्तु अन्दर शून्य है—ऐसा प्रथम कथन में आ गया है। फिर लिया कि बन्ध क्यों होता है ? ऐसी चीज़ में बन्ध क्यों होता है ? कर्म का बन्ध किया तो क्यों आया ? तो कहते हैं स्वरूप के-चिदानन्द भगवान के ख्याल बिना-ज्ञान बिना, उसके अज्ञान से बन्ध होता है। समझ में आया ? अज्ञान का माहात्म्य है। **ऐसा अज्ञान का सामर्थ्य कहनेरूप विशेष विवरण किया गया। तत्पश्चात् चार गाथाओं द्वारा जीव का अभोक्तृत्वगुण के व्याख्यान की मुख्यता से व्याख्यान किया गया।** पहले कहा था परन्तु अभोक्तृत्वगुण का सामान्य व्याख्यान था। पहले-पहले आया न। यह अभोक्तृत्वगुण का विशेष व्याख्यान है। **तत्पश्चात् दो गाथाएँ कही गईं, जिनके द्वारा पहले बारह गाथाओं में शुद्धनिश्चय से कर्तृत्व-भोक्तृत्व के अभावरूप....** शुद्धनिश्चय से भगवान आत्मा, पर्याय का कर्ता और भोक्ता नहीं। **तथा बन्ध-मोक्ष के कारण और परिणाम के अभावरूप...** पहले शून्य कहा था। समझ में आया ?

ध्रुव भगवान आत्मा तो बन्ध के कारण और मोक्ष के कारण परिणाम और बन्ध और मोक्षरूप परिणाम से अभावरूप है। वहाँ शून्य कहा था, यहाँ अभाव कहा। ऐसी बात आ गयी है। समझ में आया ? **जो व्याख्यान किया गया था, उसी का उपसंहार किया गया।**

उसका उपसंहार यह है। इस प्रकार समयसार की शुद्धात्मानुभूतिलक्षण.... देखो, भगवान आत्मा ध्रुव! उसकी अनुभूति-अनुभव होना, ऐसी अनुभूति जिसका लक्षण ऐसी **'तात्पर्यवृत्ति' नाम की टीका में मोक्षाधिकार सम्बन्धी चूलिका समाप्त हुई अथवा अन्य प्रकार से व्याख्यान करने पर, यहाँ मोक्षाधिकार समाप्त हुआ।**

फिर विशेष कहा जाता है - अब विशेष स्पष्टीकरण आयेगा। कहते हैं **औपशमिकादि पाँच भावों में किस भाव से मोक्ष होता है, (वह विचारते हैं।)** अब, जरा बात।

मुमुक्षु : वह तो पर्याय की बात...

पूज्य गुरुदेवश्री : पर्याय की बात है। इन पाँच भावों में एक (भाव) द्रव्य भी है और चार भाव पर्यायें हैं तो किस भाव से मोक्ष होता है? उसमें किस पर्याय से मोक्ष होता है? किस अवस्था से आत्मा की मुक्ति होती है? समझ में आया?

औपशमिकादि पाँच भावों में किस भाव से मोक्ष होता है, वह विचारते हैं। अब भाव कौन से? **वहाँ औपशमिक,...** पहला भाव। औपशमिक का अर्थ? आत्मा में सम्यग्दर्शन और सम्यक्चारित्र होता है, वह उपशमभावरूप है, क्षय नहीं। उसकी प्रकृति के परमाणु पड़े हैं। जैसे जल में मैल है, उसमें फिटकरी डालने से मैल बैठ गया है। मैल समझे न? नीचे जल में मैल बैठ गया है, निकल नहीं गया; वैसे आत्मा में इस सम्यग्दर्शन में उपशम प्रकृति का दबना-दबना अन्दर, यह उपशम हुआ। प्रकृति का अभाव (क्षय) नहीं हुआ है। समझ में आया?

एक दृष्टान्त याद आया हमारे पालेज में। मनसुख को पता तो नहीं होगा। इसके पहले की-तेरे जन्म के पहले की बात है। एक बखार थी और बखार पीछे है न, उसके नीचे एक बड़ा सर्प गिर गया, बहुत वर्ष पहले की बात है। इसके पहले की बात है। हमारे वहाँ (पालेज में) दुकान थी न! बड़ी बखार, बड़ा सर्प निकालना किस प्रकार? बहुत लोग आ चढ़े उसमें कोई बड़ा होगा उसने कहा ठण्डा पानी छिड़को।

मुमुक्षु : पानी छिड़के तो रहे नहीं और मरे नहीं।

पूज्य गुरुदेवश्री : (सर्प) मर भी न जाये और निकल जाये, पीछे बखार थी न, वहाँ नीचे सर्प। तेरा जन्म तो ७४ में हुआ, उसके पहले की बात है। वह सर्प-बड़ा सर्प था। अब

उसे निकालना किस प्रकार ? और नीचे क्या कहलाता है ? हड़फो-हड़फो ! हड़फो अर्थात् लकड़ी की-लकड़ी की पेटी। अब लकड़ी की पेटी में माल (पेटी) उठाना किस प्रकार ? किसी ने कहा कि पानी छिड़को, पहले पानी छिड़कने के बाद पकड़ो। इसी प्रकार इस प्रकृति का उपशम पानी छिड़कना पहले (यह उपशम)। समझ में आया ?

दर्शन-मोह की प्रकृति और चारित्रमोह की प्रकृति पर पानी छिड़का-उपशम किया पहले (प्रकृति शान्त हो गयी)। अभाव नहीं किया। ऐसा पर्याय में उपशम। याद आ गया दृष्टान्त। समझ में आया ? ऐसा सम्यग्दर्शन, (दृष्टान्त) बहुत बार याद आता था। समझ में आया ?

उपशम सम्यग्दर्शन पहले कहा। देखो ! इसमें दो ही लेना, औपशमिक के दो प्रकार - ऐसा लेना। एक उपशम सम्यग्दर्शन और उपशम चारित्र दो प्रकार। इस क्षायोपशमिक के अठारह प्रकार तत्त्वार्थसूत्र में अठारह (प्रकार) दिये हैं। (मति, श्रुत, अवधि, मन:पर्यय ये चार ज्ञान; कुमति, कुश्रुत, कुअवधि, ये तीन अज्ञान; चक्षु, अचक्षु, अवधि ये तीन दर्शन; क्षायोपशमिक दान-लाभ-भोग-उपभोग-वीर्य ये पाँच लब्धियाँ; ऐसे चार + तीन + तीन और पाँच भेद तथा क्षायोपशमिक (सम्यक्त्व और) चारित्र और संयमासंयम, क्षायोपशमिक भाव के अठारह भेद हैं। तत्त्वार्थसूत्र।) ऐसे अठारह भाव हैं वे तत्त्वार्थसूत्र में हैं और क्षायिक के नौ बोल हैं (केवलज्ञान, केवलदर्शन, क्षायिक दान, क्षायिक लाभ, क्षायिक भोग, क्षायिक उपभोग, क्षायिक वीर्य तथा 'च' कहने से क्षायिक सम्यक्त्व और क्षायिक चारित्र-ऐसे क्षायिकभाव के नौ भेद हैं। तत्त्वार्थसूत्र, अध्याय २, सूत्र ४) और उदय के इक्कीस भेद हैं। तत्त्वार्थसूत्र के (तिर्यंच, नरक, मनुष्य, देव ये चार गति; क्रोध, मान, माया, लोभ ये चार कषाय; स्त्रीवेद, पुरुषवेद, और नपुंसकवेद ये तीन लिंग; मिथ्यादर्शन; अज्ञान; असंयम; असिद्धत्व तथा कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म, शुक्ल ये छह लेश्या ऐसे चार+चार+तीन+एक+एक+एक+एक और छह = ये सब मिलकर औदयिकभाव के इक्कीस भेद हैं।) **ये चार भाव, पर्यायरूप हैं...** ये चार भाव अवस्थारूप है। त्रिकाली ध्रुवस्वरूप नहीं। थोड़ा समझना पड़े भाई ! लम्बा थोड़ा। कितनों को तो पता भी नहीं होगा, पाँच भाव का नाम भी नहीं आता होगा। पाँच भाव है तो ये चार भाव तो पर्यायरूप है, अवस्था है, आत्मा जो ध्रुव त्रिकाल है, वह तो पारणामिकभाव है, वह तो द्रव्यरूप है और

ये चार भाव हैं, वे पर्याय-अवस्थारूप है। दोनों मिलकर पूरा प्रमाण का विषय बनता है। थोड़ा सूक्ष्म आ गया। समझ में आया?

ये चार भाव, पर्यायरूप हैं... पर्याय समझे? अवस्था। पहले कहा न जो ध्रुव! पहले कहा न, शुद्ध द्रव्यार्थिकनय से जो जीव ध्रुव, उसकी पर्यायरूप ये चार भाव हैं; ये चार भाव ध्रुवरूप नहीं। तत्त्वार्थसूत्र में आता है परन्तु विचार नहीं, दरकार नहीं। यह तो दशलक्षणी पर्व में पहाड़े बोल जाते हैं, पण्डितजी! नन्दकिशोरजी! है पहाड़े!

तो कहते हैं कि **ये चार भाव, पर्यायरूप हैं....** विशेष स्पष्टीकरण आगे आयेगा। पाँच मिनिट पहले बन्द करते हैं-ऐसी जरूरत है।

(**श्रोता :** प्रमाण वचन गुरुदेव!)

कल्याण की मूर्ति

हे भव्य जीवों! यदि तुम आत्मकल्याण करना चाहते हो तो स्वत: शुद्ध और सर्वप्रकार से परिपूर्ण आत्मस्वभाव की रुचि और विश्वास करो तथा उसी का लक्ष्य और आश्रय ग्रहण करो; इसके अतिरक्ति अन्य समस्त रुचि, लक्ष्य और आश्रय का त्याग करो। स्वाधीन स्वभाव में ही सुख है; परद्रव्य तुम्हें सुख या दु:ख देने के लिये समर्थ नहीं है। तुम अपने स्वाधीन स्वभाव का आश्रय छोड़कर अपने ही दोषों से पराश्रय के द्वारा अनादि काल से अपना अपार अकल्याण कर रहो हो! इसलिए अब सर्व परद्रव्यों का लक्ष्य और आश्रय छोड़कर, स्वद्रव्य का ज्ञान, श्रद्धान तथा स्थिरता करो।

स्वद्रव्य के दो पहलू हैं — एक त्रिकालशुद्ध स्वत: परिपूर्ण निरपेक्ष स्वभाव और दूसरा क्षणिक, वर्तमान में होनेवाली विकारी पर्याय अवस्था। पर्याय स्वयं अस्थिर है; इसलिए उसके लक्ष्य से पूर्णता की प्रतीतिरूप सम्यग्दर्शन प्रगट नहीं होता, किन्तु जो त्रिकालस्वभाव है, वह सदा शुद्ध है, परिपूर्ण है और वर्तमान में भी वह प्रकाशमान है; इसलिए उसके आश्रय तथा लक्ष्य से पूर्णताा की प्रतीतिरूप सम्यग्दर्शन प्रगट होगा। यह सम्यग्दर्शन स्वयं कल्याणरूप है और यही सर्वकल्याण का मूल है। ज्ञानीजन सम्यग्दर्शन को 'कल्याणमूर्ति' कहते हैं। इसलिए सर्व प्रथम सम्यग्दर्शन प्रगट करने का अभ्यास करो।

—पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी